

Principles of Accounting

The first principle of accounting is the Entity Concept. It states that the business is a separate entity from its owners. The business's financial transactions should be recorded separately from the owners' personal transactions. For example, if an owner withdraws money from the business for personal use, it is recorded as a withdrawal, not as a sale or purchase. This concept is essential for determining the true financial position of the business.

Table with 5 columns: Particulars, Debit, Credit, Balance, and Date. The table contains several rows of handwritten entries, likely representing a ledger account.

Particulars	Debit	Credit	Balance	Date
...
...
...
...
...

The second principle is the Going Concern Concept. It assumes that the business will continue to operate for the foreseeable future. This assumption is necessary for valuing assets and liabilities. For instance, land owned by a business is valued at its market price, not at its scrap value, because the business is expected to use it in the future. This concept is fundamental for preparing financial statements that provide a true and fair view of the business's financial position.

संयुक्त अर्थों में इसकी अवधि को समझा उपभोग व्यय में 150
 वर्षों की अवधि होगी इसी प्रकार चौथे अवधि में कुल आय 875
 वर्षों में एक प्रतिशत आयगी। गुणक 77 त्वरक को प्रभाव के परिणाम
 के साथ 4 वर्षों तक आय बढ़ती है। इसके बाद आय काटने लगती है।
 औद्योगिक इस विचार तक आते आते गुणक एवं त्वरक दोनों इतिहास
 हो जाते हैं। इस प्रकार गुणक एवं त्वरक को प्रभाव को प्रदर्श कर
 व्यापार चक्र की चक्र गति स्पष्ट करती है।

संयुक्तलय के गुणक एवं त्वरक अर्थों में माडल को निम्न
 प्रकार दिखाना जा सकता है। $C_t = \alpha Y_{t-1}$ ---- (1)

अर्थात् सीमांत उपभोग हमला है, $C_t = \alpha$ समय पर उपभोग Y_{t-1}
 $Y_{t-1} = E - D$ समय पर प्राप्ति आय को बचता है। इसके अलावा
 निवेशों को उपभोग परिवर्तन के कारण के साथ ही परिभाषित
 किया जा सकता है। $I_t = B(C_t - C_{t-1})$ अर्थात् B त्वरक गुणक है।
 कोण्ड के जन्म साल $Y_t = C_t + I_t$ ---- (2) अर्थात् $C_t =$ समय पर
 प्रयत्न विनिर्माण है। समीकरण (1) समीकरण (2) और को मिला
 प्रतिस्थापित करने पर $Y_t = C_t + \alpha Y_{t-1} + B(C_t - C_{t-1})$

$$= C_t + \alpha Y_{t-1} + B C_t - B C_{t-1} = C_t (1 + B) + \alpha Y_{t-1} - B C_{t-1}$$

$$C_t = \frac{Y_t}{1+B} = \frac{Y_t + \alpha Y_{t-1} - B C_{t-1}}{1+B}$$

$$Y_t = \frac{Y_t + \alpha Y_{t-1} - B C_{t-1}}{1+B} + \alpha Y_{t-1} + B C_{t-1}$$

संयुक्तलय के अवस्था चक्र में दो अवधियों की राशियें आय
 जाते हैं तो अवधि अवधि को राशियें आय, और जो लोकर आसानी
 से निकाली जा सकती है और निम्नलिखित सीमांत उपभोग प्रवृत्ति के साथ
 समुच्चय के चक्र में गुणक पर निर्भर करेगा। अर्थात् मानकर कि सीमांत
 उपभोग प्रवृत्ति का मुख्य गुणक से अधिक है और एक समय $0 < \alpha < 1$
 एवं त्वरक का मुख्य गुणक से अधिक $B > 0$ है। संयुक्तलय पांच
 प्रकार के चक्रों में उतार-चढ़ावों को जालना करता है।

संयुक्तलय के माडल की कुछ विशेषताएँ हैं जो निम्न हैं।

- (i) गुणक एवं त्वरक के मूल में अंतर होने के साथ ही व्यापार चक्र की आवृत्ति भी बढ़ जाती है जैसे जैसे गुणक तथा त्वरक के गुणक अंतर आता है वैसे वैसे व्यापार चक्र की आवृत्ति भी बढ़ जाती है।
- (ii) सीमांत उपभोग के गुणक α का मान जितना अधिक होगा, उतार चढ़ाव का स्वरूप उतनी ही कम होगा।
- (iii) व्यापार चक्रों का निर्माण इस मान्यता पर निर्भर करेगा कि उपभोग प्रवृत्ति का मान गुणक से अधिक तथा α से कम हो तब ही त्वरक को मुख्य गुणक से अधिक है।